INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY FUTURISTIC DEVELOPMENT

अफ्रीका में भारत और चीन की प्रतिस्पर्धा: एक तुलनात्मक अध्ययन

रमन हलदार
शोधार्थी, अफ्रीकी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

* Corresponding Author: **रमन हलदार**

Article Info

P-ISSN: 3051-3618
E-ISSN: 3051-3626
Impact Factor (RSIF): 8.31
Volume: 07
Issue: 02
Received: 18-04-2026
Accepted: 20-05-2026
Published: 22-06-2026
Page No: 10-13

Abstract
21वीं सदी में अफ्रीका वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा है। प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, युवा जनसंख्या, तीव्र आर्थिक विकास की संभावनाएँ तथा सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों के कारण विश्व की प्रमुख शक्तियाँ अफ्रीका में अपनी उपस्थिति बढ़ा रही हैं। इस संदर्भ में भारत और चीन दोनों अफ्रीका के साथ अपने आर्थिक, राजनीतिक और सामरिक संबंधों को लगातार मजबूत कर रहे हैं।
चीन ने बड़े पैमाने पर आधारभूत संरचना (Infrastructure), ऊर्जा, खनन और परिवहन परियोजनाओं में निवेश कर अफ्रीका में अपना प्रभाव बढ़ाया है। दूसरी ओर, भारत ने विकास साझेदारी (Development Partnership), क्षमता निर्माण (Capacity Building), शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि तथा मानव संसाधन विकास को अपने सहयोग का आधार बनाया है। भारत की नीति अफ्रीकी देशों की आवश्यकताओं और उनकी विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप सहयोग पर आधारित है, जबकि चीन का मॉडल बड़े निवेश और अवसंरचना परियोजनाओं पर अधिक केंद्रित है।
यह शोध-लेख अफ्रीका में भारत और चीन की नीतियों, रणनीतियों, उपलब्धियों और चुनौतियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। साथ ही यह लेख दोनों देशों की अफ्रीका नीति के भविष्य और वैश्विक राजनीति पर उसके प्रभाव का भी विश्लेषण करता है।

Keywords: भारत, चीन, अफ्रीका, बेल्ट एंड रोड पहल, भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन, FOCAC, विकास साझेदारी, वैश्विक दक्षिण।

1. Introduction

अफ्रीका विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है, जहाँ 54 मान्यता प्राप्त संप्रभु देश हैं। यह महाद्वीप प्राकृतिक संसाधनों, खनिज संपदा, कृषि क्षमता तथा युवा जनसंख्या से समृद्ध है। पिछले दो दशकों में अफ्रीका की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं, जिसके कारण यह वैश्विक निवेश और व्यापार का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है।

21वीं सदी में भारत और चीन दोनों ने अफ्रीका के साथ अपने संबंधों को नई प्राथमिकता दी है। चीन ने "बेल्ट एंड रोड पहल (BRI)" और "फोरम ऑन चाइना-अफ्रीका कोऑपरेशन (FOCAC)" के माध्यम से बड़े पैमाने पर निवेश और अवसंरचना परियोजनाओं को बढ़ावा दिया है। दूसरी ओर, भारत ने "भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (IAFS)" के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, क्षमता निर्माण और तकनीकी सहयोग पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है।

यद्यपि भारत और चीन दोनों अफ्रीका में अपने प्रभाव का विस्तार कर रहे हैं, लेकिन उनकी रणनीतियाँ, कार्यप्रणाली और विकास मॉडल एक-दूसरे से भिन्न हैं। चीन का ध्यान बड़े आर्थिक निवेश और अवसंरचना परियोजनाओं पर है, जबकि भारत अपेक्षाकृत कम लागत वाले, मानव-केंद्रित और क्षमता निर्माण आधारित सहयोग को प्राथमिकता देता है।

इसी कारण अफ्रीका आज भारत और चीन के बीच केवल आर्थिक सहयोग का क्षेत्र नहीं, बल्कि भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का भी महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है।

अफ्रीका का सामरिक और आर्थिक महत्व

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में अफ्रीका का महत्व लगातार बढ़ रहा है। विश्व के लगभग 30 प्रतिशत खनिज संसाधन, विशाल तेल एवं प्राकृतिक गैस भंडार तथा कोबाल्ट, लिथियम, तांबा, मैंगनीज और दुर्लभ खनिज (Rare Earth Minerals) जैसे महत्वपूर्ण संसाधन अफ्रीका में उपलब्ध हैं। ये संसाधन आधुनिक उद्योगों, इलेक्ट्रिक वाहनों, रक्षा उत्पादन और हरित ऊर्जा के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

अफ्रीका की जनसंख्या 1.5 अरब से अधिक है और यह विश्व का सबसे युवा महाद्वीप माना जाता है। बढ़ती जनसंख्या और तेजी से विकसित होते उपभोक्ता बाजार के कारण अफ्रीका भविष्य का एक महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र बनने की क्षमता रखता है।

सामरिक दृष्टि से भी अफ्रीका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लाल सागर (Red Sea), स्वेज नहर (Suez Canal), अदन की खाड़ी (Gulf of Aden) तथा हिंद महासागर के समुद्री मार्ग विश्व व्यापार की जीवनरेखा माने जाते हैं। इन समुद्री मार्गों की सुरक्षा ऊर्जा आपूर्ति और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसलिए भारत और चीन दोनों इन क्षेत्रों में अपनी रणनीतिक उपस्थिति को मजबूत करने का प्रयास कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, अफ्रीकी देशों का संयुक्त राष्ट्र महासभा में बड़ा प्रतिनिधित्व है। वैश्विक संस्थाओं में सुधार, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास तथा वैश्विक दक्षिण (Global South) से जुड़े मुद्दों पर अफ्रीकी देशों का समर्थन भारत और चीन दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार अफ्रीका केवल प्राकृतिक संसाधनों का स्रोत नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास, भू-राजनीतिक प्रभाव और वैश्विक कूटनीति का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। यही कारण है कि भारत और चीन दोनों अफ्रीका के साथ अपने संबंधों को निरंतर सुदृढ़ करने का प्रयास कर रहे हैं।

अफ्रीका में चीन की नीति

21वीं सदी में चीन ने अफ्रीका को अपनी विदेश नीति का एक प्रमुख केंद्र बनाया है। इसका मुख्य उद्देश्य ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना, प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच बढ़ाना, नए निर्यात बाज़ार विकसित करना तथा वैश्विक स्तर पर अपने राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव का विस्तार करना है। चीन की अफ्रीका नीति का आधार **"पारस्परिक लाभ और साझा विकास" (Mutual Benefit and Common Development)** का सिद्धांत है, जिसके माध्यम से वह अफ्रीकी देशों के साथ दीर्घकालिक साझेदारी स्थापित करने का प्रयास करता है।

चीन का मानना है कि अफ्रीका भविष्य की वैश्विक अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण केंद्र होगा। इसी कारण उसने पिछले दो दशकों में अरबों डॉलर का निवेश कर सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों, हवाई अड्डों, बिजली संयंत्रों और औद्योगिक क्षेत्रों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

फोरम ऑन चाइना–अफ्रीका कोऑपरेशन (FOCAC)

वर्ष 2000 में चीन ने **फोरम ऑन चाइना–अफ्रीका कोऑपरेशन (FOCAC)** की स्थापना की। यह मंच चीन और अफ्रीकी देशों के बीच राजनीतिक संवाद, व्यापार, निवेश, तकनीकी सहयोग तथा विकास परियोजनाओं को बढ़ावा देने का प्रमुख माध्यम बन गया है। FOCAC के माध्यम से चीन नियमित शिखर सम्मेलनों का आयोजन करता है, जहाँ नई वित्तीय सहायता, निवेश योजनाओं और विकास परियोजनाओं की घोषणा की जाती है। इसके परिणामस्वरूप चीन आज अफ्रीका का सबसे बड़ा द्विपक्षीय व्यापारिक साझेदार बन चुका है।

बेल्ट एंड रोड पहल (BRI) और अवसंरचना विकास

वर्ष 2013 में राष्ट्रपति शी चिनफिंग द्वारा शुरू की गई **बेल्ट एंड रोड पहल (Belt and Road Initiative – BRI)** ने अफ्रीका में चीन की उपस्थिति को और अधिक मजबूत किया। इस पहल के अंतर्गत चीन ने अनेक अफ्रीकी देशों में सड़क, रेल, बंदरगाह, औद्योगिक पार्क और ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश किया।

केन्या में **मोम्बासा–नैरोबी स्टैंडर्ड गेज रेलवे**, इथियोपिया–जिबूती रेलवे, नाइजीरिया में रेल परियोजनाएँ तथा जिबूती में चीन का पहला विदेशी सैन्य अड्डा इस नीति के प्रमुख उदाहरण हैं। इन परियोजनाओं ने परिवहन और व्यापार को बढ़ावा दिया, जिससे कई देशों में आर्थिक गतिविधियाँ तेज हुईं।

इसके अतिरिक्त, चीन की कंपनियों ने दूरसंचार, 5G नेटवर्क, डिजिटल अवसंरचना और स्मार्ट शहरों के विकास में भी महत्वपूर्ण निवेश किया है।

व्यापार और निवेश

चीन और अफ्रीका के बीच व्यापार पिछले दो दशकों में तेज़ी से बढ़ा है। चीन अफ्रीका से मुख्य रूप से कच्चा तेल, तांबा, कोबाल्ट, लौह अयस्क, लकड़ी तथा अन्य खनिज आयात करता है। इसके बदले चीन मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, वाहन, वस्त्र और उपभोक्ता वस्तुओं का निर्यात करता है।

चीन ने अफ्रीका में अरबों डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) किया है। ऊर्जा, खनन, निर्माण, दूरसंचार और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में चीनी कंपनियाँ सक्रिय हैं। इस निवेश ने कई अफ्रीकी देशों में रोजगार और आधारभूत संरचना के विकास में योगदान दिया है।

चीन की नीति की चुनौतियाँ

हालाँकि चीन की परियोजनाओं ने अफ्रीका के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, लेकिन इनसे जुड़ी कई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

सबसे बड़ी चिंता **ऋण निर्भरता (Debt Dependency)** की है। कई अफ्रीकी देशों पर चीन का भारी कर्ज़ है, जिसके कारण "ऋण-जाल कूटनीति" (Debt Trap Diplomacy) की चर्चा होती रही है। हालाँकि चीन इस आरोप को स्वीकार नहीं करता, फिर भी श्रीलंका के हम्बनटोटा बंदरगाह जैसे उदाहरणों के कारण अफ्रीका में भी इस विषय पर बहस होती रही है।

इसके अलावा कुछ परियोजनाओं में स्थानीय श्रमिकों की सीमित भागीदारी, पर्यावरणीय प्रभाव, पारदर्शिता की कमी और चीनी कंपनियों को अत्यधिक लाभ मिलने जैसी आलोचनाएँ भी की जाती हैं।

कुछ अफ्रीकी देशों में स्थानीय उद्योगों को सस्ते चीनी उत्पादों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है, जिससे घरेलू विनिर्माण क्षेत्र प्रभावित हुआ है।

अफ्रीका में भारत की नीति

भारत और अफ्रीका के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विश्वास पर आधारित हैं। भारत की अफ्रीका नीति का मुख्य उद्देश्य केवल व्यापार या संसाधनों की प्राप्ति नहीं, बल्कि **विकास साझेदारी (Development Partnership)**, **क्षमता निर्माण (Capacity Building)** और **दक्षिण-दक्षिण सहयोग (South-South Cooperation)** को बढ़ावा देना है। भारत अफ्रीकी देशों की विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप सहयोग प्रदान करने पर बल देता है।

भारत ने 2008, 2011 और 2015 में आयोजित **भारत–अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (India–Africa Forum Summit–IAFS)** के माध्यम से अपने संबंधों को नई दिशा दी। इन सम्मेलनों में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सूचना प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, व्यापार, निवेश और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी।

भारत अफ्रीकी देशों को **लाइन ऑफ क्रेडिट (Line of Credit)**, तकनीकी सहायता, छात्रवृत्तियाँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा विकास परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। भारतीय

तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (ITEC) कार्यक्रम के अंतर्गत हजारों अफ्रीकी अधिकारियों और विद्यार्थियों को भारत में प्रशिक्षण दिया जाता है।

भारत की प्रमुख विकास पहलें

भारत ने अफ्रीका में कई महत्वपूर्ण विकास कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिनमें प्रमुख हैं—

- **ई-विद्याभारती (e-VidyaBharti):** ऑनलाइन शिक्षा और उच्च शिक्षा तक पहुँच।
- **ई-आरोग्यभारती (e-ArogyaBharti):** टेलीमेडिसिन और स्वास्थ्य सेवाएँ।
- **आईटीईसी (ITEC):** तकनीकी एवं प्रशासनिक प्रशिक्षण।
- **ICCR छात्रवृत्तियाँ:** अफ्रीकी छात्रों के लिए उच्च शिक्षा।
- **पैन-अफ्रीकन ई-नेटवर्क परियोजना:** डिजिटल शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार।

कोविड-19 महामारी के दौरान भारत ने "**वैक्सीन मैत्री**" पहल के अंतर्गत अनेक अफ्रीकी देशों को कोविड-19 टीके और आवश्यक दवाइयाँ उपलब्ध कराईं। इससे भारत की छवि एक विश्वसनीय और मानवीय विकास साझेदार के रूप में और मजबूत हुई।

भारत और चीन की रणनीतियों का तुलनात्मक अध्ययन

यद्यपि भारत और चीन दोनों अफ्रीका में अपने संबंधों का विस्तार कर रहे हैं, लेकिन उनकी कार्यप्रणाली, प्राथमिकताएँ और सहयोग के तरीके अलग-अलग हैं।

आधार	भारत	चीन
नीति का आधार	विकास साझेदारी, क्षमता निर्माण	अवसंरचना विकास और बड़े निवेश
मुख्य पहल	IAFS, ITEC, e-VBAB	BRI, FOCAC
मुख्य निवेश क्षेत्र	शिक्षा, स्वास्थ्य, आईटी, कृषि	रेलवे, सड़क, बंदरगाह, ऊर्जा
वित्तीय मॉडल	रियायती ऋण और तकनीकी सहयोग	बड़े ऋण और अवसंरचना वित्तपोषण
सॉफ्ट पावर	लोकतंत्र, संस्कृति, शिक्षा, योग, आयुर्वेद	आर्थिक शक्ति और निर्माण परियोजनाएँ
स्थानीय भागीदारी	कौशल विकास और स्थानीय क्षमता निर्माण पर अधिक बल	कई परियोजनाओं में चीनी कंपनियों और श्रमिकों की प्रमुख भूमिका

भारत की सबसे बड़ी ताकत यह है कि वह अफ्रीका के साथ **समानता और साझेदारी** के आधार पर संबंध विकसित करने का प्रयास करता है। भारतीय परियोजनाओं में स्थानीय क्षमता निर्माण, मानव संसाधन विकास और दीर्घकालिक सहयोग को प्राथमिकता दी जाती है।

इसके विपरीत चीन की ताकत उसकी **तेज़ निर्णय क्षमता, विशाल वित्तीय संसाधन और बड़े पैमाने पर अवसंरचना निर्माण** है। यही कारण है कि चीन ने अपेक्षाकृत कम समय में अफ्रीका में व्यापक आर्थिक उपस्थिति स्थापित की है।

हालाँकि, चीन की कुछ परियोजनाओं पर **ऋण निर्भरता**, **पारदर्शिता की कमी** और **स्थानीय उद्योगों पर प्रभाव** जैसे प्रश्न उठते रहे हैं। दूसरी ओर, भारत को सीमित वित्तीय संसाधनों और अपेक्षाकृत धीमी परियोजना क्रियान्वयन जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष

21वीं सदी में अफ्रीका वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और भू-राजनीति का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा है। प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, युवा जनसंख्या, उभरते बाज़ार और सामरिक महत्व के कारण भारत और चीन दोनों ने अफ्रीका के साथ अपने संबंधों को नई प्राथमिकता दी है। दोनों देशों ने व्यापार, निवेश, अवसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा और तकनीकी सहयोग के माध्यम से अफ्रीका में अपनी उपस्थिति मजबूत की है।

चीन ने **बेल्ट एंड रोड पहल (BRI)** और **फोरम ऑन चाइना–अफ्रीका कोऑपरेशन (FOCAC)** के माध्यम से बड़े पैमाने पर अवसंरचना निर्माण, वित्तीय सहायता और निवेश को बढ़ावा दिया है। इसके परिणामस्वरूप चीन अफ्रीका का प्रमुख व्यापारिक साझेदार बन गया है। हालांकि, बढ़ते ऋण, पारदर्शिता की कमी और स्थानीय उद्योगों पर प्रभाव जैसे मुद्दों के कारण उसकी नीति की आलोचना भी हुई है।

दूसरी ओर, भारत ने **भारत–अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (IAFS)**, **भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (ITEC)**, **ई-विद्याभारती**, **ई-आरोग्यभारती** तथा **वैक्सीन मैत्री** जैसी पहलों के माध्यम से विकास साझेदारी, क्षमता निर्माण, शिक्षा, स्वास्थ्य और मानव संसाधन विकास पर विशेष ध्यान दिया है। भारत का सहयोग मॉडल अपेक्षाकृत अधिक सहभागी, मांग-आधारित और दीर्घकालिक विकास पर केंद्रित है, जिससे अफ्रीकी देशों में उसके प्रति विश्वास बढ़ा है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो चीन की सबसे बड़ी शक्ति उसका विशाल निवेश, तीव्र परियोजना क्रियान्वयन और अवसंरचना निर्माण की क्षमता है, जबकि भारत की प्रमुख ताकत उसके ऐतिहासिक संबंध, लोकतांत्रिक मूल्य, सांस्कृतिक निकटता, तकनीकी विशेषज्ञता और मानव-केंद्रित विकास दृष्टिकोण में निहित है। दोनों देशों की कार्यप्रणाली अलग होने के बावजूद उनका उद्देश्य अफ्रीका के साथ अपने आर्थिक, राजनीतिक और रणनीतिक संबंधों को सुदृढ़ करना है।

संदर्भ

1. एल्डन सी. *चाइना इन अफ्रीका*। लंदन: ज़ेड बुक्स; 2007।
2. ब्रॉटिगम डी. *द ड्रैगन्स गिफ्ट: द रियल स्टोरी ऑफ चाइना इन अफ्रीका*। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2009।
3. नायडू एस. *इंडिया–अफ्रीका रिलेशंस: फाइंडिंग ए न्यू फुटिंग*। ऑक्सफोर्ड: फहामू बुक्स; 2010।
4. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। *भारत–अफ्रीका संबंध* [इंटरनेट]। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://www.mea.gov.in/india-africa-relations.htm
5. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। *भारत–अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (India–Africa Forum Summit): दिल्ली घोषणा*। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय; 2015।
6. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। *भारत की विकास साझेदारी प्रशासन (Development Partnership Administration)* [इंटरनेट]। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://www.mea.gov.in
7. चीन जनवादी गणराज्य, विदेश मंत्रालय। *चीन की अफ्रीका नीति (China's Africa Policy)*। बीजिंग: विदेश मंत्रालय, चीन

जनवादी गणराज्य; 2024।
8. फोरम ऑन चाइना–अफ्रीका कोऑपरेशन (FOCAC)। *कार्य योजना एवं आधिकारिक दस्तावेज़* [इंटरनेट]। बीजिंग: FOCAC; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://www.focac.org
9. अफ्रीकी संघ। *अफ्रीका–भारत साझेदारी* [इंटरनेट]। अदीस अबाबा: अफ्रीकी संघ; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://au.int/en/partnerships/africa-india-partnership
10. विश्व बैंक। *विश्व विकास संकेतक (World Development Indicators)* [इंटरनेट]। वाशिंगटन, डी.सी.: विश्व बैंक; 2024 [उद्धृत 2026 जुलाई 18]। उपलब्ध: https://data.worldbank.org